C-03

Unit-03

Q शिक्षक के लिए दक्षता अनिवार्य है। कैसे?
या,
दक्ष शिक्षक की भूमिका क्या होती है?

Ans→ शिक्षकों को अपने कार्य-प्रदर्शन के विभिन्न क्षेत्रों मे उत्तम प्रदर्शन करने तथा उत्तरदायित्वों की दक्षता (कुशलता) और समझदारी से निर्वाह करने के लिए वर्तमान पाठ्यक्रम में परिवर्तन करना होगा। इन परिवर्तनों के सन्दर्भ में एन.सी.टी.ई. के दस्तावेज गुणात्मक विद्यालय शिक्षा हेतु दक्षता आधारित व प्रतिबद्धता उन्मुख अध्यापक शिक्षा सेवाकालीन शिक्षा के निम्न दस दक्षता क्षेत्रों का उल्लेख किया गया है:-

(1) सान्दर्भिक या प्रासंगिक योग्यताएँ
(2) अवधारणात्मक या धारणात्मक योग्यताएँ
(3) पाठ्यक्रम व पाठ्य सामग्री विषयक योग्यताएँ
(4) कार्य निष्पादन विषयक योग्यताएँ
(5) अन्य शैक्षणिक गतिविधियों से सबंधित योग्यताएँ
(6) शिक्षण-सामग्री विकसित करने की योग्यताएँ
(7) मूल्यांकन की योग्यताएँ
(8) प्रबंधन योग्यताएँ
(9) अभिभावकों से संपर्क तथा सहयोग सबंधी योग्यताएँ
(10) समुदाय से संपर्क व सहयोग सबंधी योग्यताएँ

इसके अलावा शिक्षक के लिए दक्षता निम्न रूपों में दक्ष होनी चाहिए। जिससे दक्ष शिक्षक की भूमिका महत्वपूर्ण हो जायगी।

(i) विषय वस्तु संबंधी दक्षताएँ (Content Related Competencies) किसी भी अध्यापक को अपने पढ़ाये जाने वाले विषय में पूरा अधिकार हो। यही नही उसे संबंधित विषयों का भी ज्ञान हो। सामान्य ज्ञान तो होना ही चाहिए। अध्यापक जितना ही विषय पर अधिकार रखता होगा वह छात्रों के लिए उतना ही प्रिय बन जाता है। विषय में मास्टरी रखने वाला व्यक्ति ही अधिगम कराने में सक्षम होगा। यह क्रिया उसके लिए आनन्द की क्रिया हो जाती है।

(ii) सम्प्रेषण संबंधी दक्षता (Transactional Competency) :- शिक्षक कार्य के लिए सबसे मुख्य कार्य जो अध्यापक को करना होता है वह है विषयवस्तु (ज्ञान) का सम्प्रेषण करना अर्थात ज्ञान को छात्रों तक पहुँचाना, जिससे वे ज्ञान को आत्मसात कर सके। तभी अधिगम का स्तर भी बढ़ता है। ज्ञान की स्मृति पटल से चिन्तन पटल तक ले जाता है, जहाँ सम्प्रेषण विधियों को लगाने पर अध्यापक को मनोवैज्ञानिक विधियों का ज्ञान भी होना जरूरी है। अध्यापक का सम्प्रेषण उसकी प्रभावशीलता के द्वारा परखा जा सकता है। कक्षा में यही सम्प्रेषण यही अवयवों पर निर्भर करता है, जैसे:-

अधिगमकर्त्ता की गुणात्मक स्थिति, कक्षागत वातावरण, अध्यापक की संलिप्तता, अधिगमकर्त्ता का प्रति उत्तर, व्यक्तिगत विकास एवं बालक की मन स्थिति, रुचि, वातावरण, ध्यान इत्यादि।

(iii) **सन्दर्भगत दक्षताएँ** (Contextual competencies):- सभी विषय परंतु विशेष रूप से विज्ञान जैसे विषयों को पढ़ाते समय मूलभूत या आधारभूत प्रत्यय स्पष्ट करने हेतु संदर्भगत दक्षता प्राप्त करना आवश्यक है। यह दक्षता इस बात पर गौर देती है कि हम जब तक पाठ्यवस्तु के संदर्भ बिंदुओं को समझ नही लेते तब तक विषय वस्तु भी समझ में नही आती। किसी घटना को तब ही हम भली-भाँति समझ सकते है जब हम उस संदर्भ की परिस्थितियों को समझ लेते है। अध्यापकीय शिक्षा समाज से संबंधित होती है, जिसका काम समाज के उच्चतर मूल्यों को स्थापित करना है इसलिए समाज के मूल्य, सामाजिक-आर्थिक स्थिति एवं सांस्कृतिक मूल्यों का जानना जरूरी है।

(iv) **संकल्पना** (concept):- अध्यापक के लिए आवश्यक है कि उसमे जटिल संकल्पनाओं को सरल ढंग से स्पष्ट करने की दक्षता होनी चाहिए। विशिष्ट आवश्यकता वाले बालको को अलग से संकल्पना स्पष्ट करना जरूरी हो जाता है, क्योंकि वे कक्षा के औसत छात्रों से भी पीछे रह जाते है। उन्हें यदि संकल्पनाएँ स्पष्ट नही हुई तो वे आगे चलकर भी कमजोर बने रहेगें।

(v) **मूल्यांकन आधारित दक्षताएँ**:- शिक्षण मे मूल्यांकन का अति महत्त्व है। बिना इसमे दक्षता प्राप्त किए अध्यापकीय दक्षता प्राप्त नही कर सकता। मूल्यांकन परिमाणात्मक भी होता है और गुणात्मक भी होता है। अध्यापक को विभिन्न प्रकार के मूल्यांकन, दक्षता परीक्षण तकनीक, बालक के उत्तर, उसके पूर्व ज्ञान, मनोविज्ञान एवं परीक्षण की परिस्थितियों के ज्ञान मे दक्ष होना चाहिए।

(vi) **प्रबन्ध संबंधी दक्षताएँ** (Managment Related Compencies):- विद्यालयों मे अच्छे ढंग की पढ़ाई अच्छे अध्यापक, अनुशासन एवं व्यवस्थित प्रबंधन के कारण ही सम्भव है। खेलकूद मे स्वस्थ प्रतियोगिता, कैप्टन के प्रति आदर्शों का सम्मान, समानता, भाईचारे की भावना लोकतंत्रीय मूल्यों का ग्रहण करना विद्यालय मे ही सीख जाते है।

(vii) **अभिभावक सह-कार्य दक्षताएँ** (Competencies Related to working with parents) प्राथमिक विद्यालयों और माध्यमिक विद्यालयों मे बीच मे ही स्कूल छोड़ देने की समस्या रहती है। अध्यापकगण इस समस्या को सुलझाने मे सहायक हो सकते है। अध्यापक भी बालक की गतिविधियों पर नजर रखेगे। बालक की पढ़ाई, स्वास्थ्य, खेलकूद सम्बन्धी पालको को सलाह देते रहेगे। दक्ष शिक्षक की ये

भूमिकाएँ अनिवार्य रूपों से होनी चाहिए जिससे वह अपने दायित्व के माध्यम से सफल एवं गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान कर सके।